TEXT PROBLEM WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY
OU_182625
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H811/V78S Accession No. G.H.1830

Author विन्दुजी ब्रह्मचारी

Title सुमन - संचय 1954

This book should be returned on or before the date last marked below.

❀ श्रीः ❀

सुमन-सञ्चय

रचियता—

भारती--भूषण, कविता—कलाधर,
व्याख्यान--वारिधि, साहित्य--रत्न
श्री मानस हंस शिरोमणि--आदि—
आदि अनेक उपाधि विभूषित--

गोस्वामी

श्री पं० 'विन्दुजी' महराज,

रिसर्च स्कॉलर श्रीरामचरित मानस।

प्रकाशक—

प्रेमधाम—वृन्दाबन,

सन् १६४५] [मूल्य ।।।=)

प्रकाशक—
कथा-कार्यालय,
प्रेमधाम, वृन्दावन, (मथुरा)

परिवार्धित प्रथम संसकरण

[सर्वाधिकार सुरक्षित]

सूचना

बिना लेखक की आज्ञा कोई सज्जन इस पुस्तक के
पद प्रकाशित करने का प्रयत्न न करें।

बिनीत—
'विन्दु'

मुद्रक—
ऐंगलो अरेबिक प्रेस,
कोठी राजा दीन दयाल,
दीन दयाल रोड,
लखनऊ।

❀ ॐ ❀

मंगलाचरण

महिमा मयी माँ शारदे, वर दे मुझे ।
विद्या अमर दे और विशद स्मरण भरदे मुझे ॥

श्री शिवस्तुति (शिखरिणी)

[२]

शिवा स्वामी शम्भो, सरल सुकृतागार तुम हो ।
दुखी दीनार्तों को शुभ सुगति दातार तुम हो ॥
तुम्हारी सेवा से कुटिल मन होता विमल है ।
तुम्हारे दासों को अतुल मिलना मोक्ष--फल है ॥

मूर्ति पूजन

पावस शरद ग्रीष्म की पवन शरीर धूप,
सहता रहे शरीर पत्थर समान कर ।
विचलित हो न कभी, अपने दृढ़ा सन सो,
चाहे रहना हो, उपवास व्रत ठान कर ॥
एक जल 'विन्दु' पान का भी लोभ हो न जिसे,
खोटी खरी सब की सुने सुकीर्ति जान कर ।
इतनी अधिक हो तपस्या जिसकी उसे ही,
लोग पूजते हैं प्रभु की ही मूर्ति मान कर ॥

(३)

नहीं हूँ ज्ञानी मैं, तप सुकृतधारी न कुछ हूँ,
तुम्हारी सेवा का परम अधिकारी न कुछ हूँ।
नहीं पुण्यात्मा हूँ, कलि प्रकृति पापाचरण हूँ,
प्रभो जैसा भी हूँ, अति दुखित आया शरण हूँ।

(४)

तुम्हारा दीनों को सुख सुयश देना न कम है,
भिखारी हूँ ऐसा-कुछ न कुछ लेना नियम है।
यही है आकांक्षा-सुदृढ़ यह विश्वास अपना--
बना लोगे स्वामी, मुझ अधम को दास अपना।

(५)

नहीं इच्छा मेरी यह कि-जगदानन्द भर दो,
नहीं आशा मेरी-यह-कि-नर-काया अमर दो।
न सारी पृथ्वी की विभव पदवी दान करदो,
मुझे तो हे स्वामी, निज चरण का प्रेम-वर दो।

(६)

तुम्हारी शोभा का यह हृदय में चित्र-पट हो,
शिवा हो वामङ्गी, हिमसदन का वृक्ष-वट हो।
जटाओं से आई चरण तक गंगा विमल हो,
हमारी आखों में पद-कमल का 'विन्दु' जल हो।

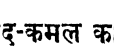

प्रभु प्रेमी

(७)

धन्य धन्य वे संत बावले जो जीवन सुख भरते हैं ।
नवल प्रेम में मर कर जीते हैं फिर जोकर मरते हैं।
जीवन मुक्त दशा मोहन मुख निरख निछावर करते हैं,
श्यामा श्याम संग निसिवासर वृन्दा विपिन विचरते हैं ॥

समस्या--गुसाईं

(८)

हौं अति दीन कहै तुलसी,
तुलसी कहै दीन को तू सुखदाई ।
हौं मति हीन कहै तुलसी,
तुलसी कहै तूने महामति पाई ॥
हौं अघ सिन्धु कहै तुलसी,
तुलसी कहै तू सुधा 'बिन्दु' को नाईं ।
हौं तेरो दास कहै तुलसी,
तुलसी कहै तू भयौ मेरो गुसाईं ॥

समस्या—गाये देत

[कमल कोश में फँसे हुये मधुकर पर]

(६)

काले मेघ ने ही दी सहायता सरोवर को,
काली कीच ही जिन्हें मही में प्रगटाये देत
काली ही विशाल नाल पालती रही जिन्हें,
काले पत्र ही जिन्हें सुअंक में उठाये देत
'विन्दु' कवि काले भृंग भारी यश गाने रहे,
किन्तु कंज पुष्प अहसान ही भुलाये देत।
वे ही आज गोरे दल में फँसे हैं ऐसे,
काल कोठरी में बाजी प्राण की लगाये देत॥

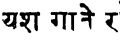

उज्जैन में शिवाजी जयन्ती

(१०)

बात सहूँ उत्पात सहूँ फिर,
संकट बन बन सहूँ महान ।
जब तक शस्त्र शिवा के करमें,
सहूँ न कभी जाति अपमान ।
जननी जन्म भूमि के कारण,
तज दूं जीवन जान जहान ।
राष्ट्र भावना का द्योतक है,
यह उनका जीवन अभिमान ॥

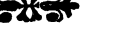

समस्या-शिवराज के इस याद से

(११)

था संगठन निर्बल तथा सत्कर्म की शिक्षा न थी,
इस देश को भी दुर्दशा था द्वेश और प्रमाद से ।
शिव को शिवा का शक्तियाँ लेकर शिवा महाराज ने,
सारा विभव वश कर लिया यवनेश के प्रसाद से ।
है आज भी आलस्य का काला घटा इस देश पर,
भारत निवासी आज भी उन्मत्त हैं उन्माद से ।
शिव की जयन्ती का यही है अर्थ बारों के लिये,
राष्ट्रोयता जग जायगी शिवराज के इस याद से ॥

समस्या-जयन्ती शिवराज की

(१२)

राष्ट्र की बधाई महाराष्ट्र वीरताई जाति--
गौरव बड़ाई है भलाई है स्वराज की।
भारत की बानी दीन आरत की रानी, देश--
द्रोही पै भवानी है कहानी नर राज की।
'विन्दु' बलिहारी शिवा शिव की दुलारी बोर-
बाहु बल कारी है सवारी सरताज की ।
सुख की बसन्ती स्वदेश की महन्ती महा--
शिव को अवन्ती में जयन्ती शिवराज की॥

झाँसी कवि सम्मेलन में

(१३)

रसिक जनों की क्यों न कसक मिटेगी आज,
सफल न होगा क्यों विनोद रस का रसाल।
सिन्धु जनता का क्यों न उमड़ पड़ेगा और,
'विन्दु' कवि होगी क्यों न सुकवि सभा निहाल।
विकसित होंगे क्यों न दर्शकों के कंज दृग,
विलसित होगी क्यों न मन मुक्ता की माल।
विद्या जननी को साथ लेकर पधारे काव्य,
कामनी के प्यारे 'विद्यादेवी' दुलारेलाल॥

समस्या--धारा है

(१४)

कौनसी अनूठी वस्तु भेंट तुलसी की करें,
जिसने विकृत ठाट हिन्दी का सुधारा है।
मान धन प्राण तन जीवन निछावर हो,
तो भी तुलना में रामग्रंथ कुछ-न्यारा है।
अंजनी कुमार ही ऋणी हैं जिस मानस के,
उसके लिये क्या भला साहस हमारा है।
और तो नहीं है उपहार वसुधा में हाँ,
सुधा समान एक अनुराग 'विन्दु' धारा है॥

समस्या-जगा दो

(१५)

अग्रसेन वाले हो तो अब अग्रसेन करके दिखलादो ।
अग्र से न पद पीछे मोड़ो अग्रसेन कुल कीर्ति जगादो ॥

(१६)

समस्या-ताप की

[भक्तों का भगवान के प्रति]

पूछते भला हो सरकार क्या हमारा हाल,
उलटी अदालत हुई है कुछ आपकी ।
लाजपति देश बन्धुओं को खींचते हो वहाँ
चिन्ता भी न करते अधीनों के विलाप की ।
'विन्दु' कवि अब तो कर्मचन्द ही हैं साथ,
ले चुके निशानियाँ तिलक और छाप की ।
अब श्री गणेश ही मिटा दिया आपने तो,
क्या दशा हो भारत के दैनिक प्रताप की ॥

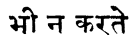

समस्या रत के

(१७)

उपकार तके नहिं आरत के,
कुरसी पद के अधिकार तके ।
न स्वतन्त्र विचार तके कबहूँ,
परतन्त्र भरे उपहार तके ।
कवि 'विन्दु' तके न कबौं घर बार,
विलायत बाग विहार तके ।
महि भार समान भये नर ते,
जिन भार तके नहिं भारत के ॥

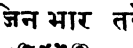

समस्या–छत्रसाल

(१८)

अक्षय नक्षत्र सम उदय प्रताप जाको,
भक्षक विपक्ष दल जासु कर वाल ढाल ।
औगुण अलक्ष 'विन्दु' रक्ष रण कौशल में,
लक्ष लक्ष वीरन में लीनी है विजय माल ।
दीनन समक्ष ले प्रत्यक्ष आपदा हरत,
क्षण क्षण करत विच्छेद छल छंद जाल ।
लक्षण विलक्षण छबीले छैल छव सुत,
रक्षक सुपक्ष वीर छत्रपति छत्र साल ॥

समस्या–मोछों पर

(१९)

आदी ठाट बाट के ही हटेंगे रण स्थल से,
हम तो डटेंगे सिर्फ खादी के अगोछों पर ।
टेढ़ी जाति वालों की जमात लाख कोसा करें,
कौनसा भरोसा करें स्वान की सी पाछों पर ।
'विन्दु' कवि आत्मिक प्रभाव का ही चाव देंगे,
चाप खड्ग तीर के न दाँव देंगे ओछों पर ।
पीछे को न पाँव देंगे वीरों का बढ़ाव देंगे,
घाव देंगे द्रोहियों को ताव देंगे मोछों पर ॥

हिन्दी साहित्य सम्मेलन झाँसी की समस्याएं--नागरी

(२०)

वे नख पे गिरिधरि उजागर,
तू कवि वृन्द गिरा की उजागरी ।
वे ब्रजभूमि विहार में आगर,
तू ब्रज भाषा विहारिणी आगरी ।
वे तो अनन्द भरे सुख सागर,
तू रस 'विन्दु' सुधा भरी गागरी ।
वे नट नागर नन्द के पूत हैं,
हिन्द की तू चख पुतरी नागरी ॥

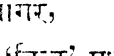

(२१)

एरी मातु हिन्दी हिन्द हिन्दू की तुही है लाज,
आदि अंत लौं है तेरो अचल सुहागरी ।
भक्ति भरी भाव भरी रीति रस चाव भरी,
अमित प्रभाव भरी सकल गुणागरी ।
'विन्दु' कवि सूर तुलसी केशवादिक की,
वानी सुन जानी जात बात या उजागरी ।
भाषै नगरी सो रसना है रस नगरी औ,
सोई रसना गिरि है जो न भाषै नागरी ॥

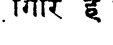

समस्या--आहैं

(२२)

काया कमान पै कान प्रमान लौं
तानि कै स्वाँस के बान चलाहैं।
दीन दशा की दुनालिन में भरि,
गोली सी हा हा की बोली सुनाहैं।
'विन्दु' झड़ी असुओं लड़ी जोरिकै,
वैरिनि पाँव में बेड़ी लगाहैं।
यों रण साजि के गाजि के लेहैं,
स्वराज किसान समाज की आहैं॥

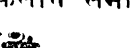

(२३)

खेत सभी रणक्षेत्र के रूप लें,
बैल ही बाज की चाल निवाहैं।
पारथ का रथ हो हल ही,
पुरुषारथ सारथी की हों सलाहैं।
अन्न के अंकुर ही हों त्रिशूल,
सकंटक 'विन्दु' घिरें रण राहैं।
वैरी लगान के काटने को,
बन जाँय कृपान किसान की आहैं।

(२४)

भारत भूमि को भूले कृपानिधि,
आरत मंडल ने की सलाहै ।
आसरा और का लेंगे न 'विन्दु',
हमीं कर लेंगे सुधार की राहैं ।
देश बचाते नहीं करुणेश,
निभाते नहीं प्रण तो न निबाहैं ।
बाहें रुकी व्रजराज की तो,
अब लेंगी स्वराज किसान की आहैं ।।

समस्या-मोछों का रखाना ही फिजूल है

(२५)

जब काटेंगे न बेड़ी परा धीनता की,
तब तक दीनता दिखाना ही उसूल है ।
जब तक माँ की गोद में न हो विनोद 'विन्दु'
तब तक मोद का मनाना ही त्रिशूल है ।
जब तक क़लम न होंगे शत्रु तब तक,
शीश निज क़लम कराना ही कबूल है ।
जब तक देश द्रोही ओछों का न नाश करें,
तब तक मोछों का रखाना फिजूल ही है ।।

(आर्यसमाज आगरा की समस्याएं)

दलित दले गये

(२६)

सूट मन मूफ पार्लीन के बनाये गये,
कालियों जुलाहों के कलेजे मसले गये।
दाढ़ी मूँछ मँगाई भीख नाई वंशजों को,
जब से अनोखे सेफ्टी रेज़र ढले गये।
डासन के बूट ने चमार कुल कूट डाला,
'बिन्दु' कवि शाही जूते ज़री के चल गये।
हाय रे विदेशी वेष तेरे उपदेश द्वारा,
वेष दलितों में देश दलित दले गये॥

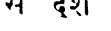

समस्या-जगा गया

(२७)

आत्म शक्ति शान्ति शम्य धीरज कवच धार,
धर्म द्रोहियों की नीति हिन्द से भगा गया।
सभ्यता के बीज बिखरा गया धरा पै शुद्ध,
ऐक्यता स्वतन्त्रता के विटप लगा गया।
तिलक चढ़ गयो समाज के स्वराज्य पर,
'बिन्दु' कवि श्रद्धा का समुद्र उमगा गया।
धन्य वह जोगी जो कि जान कुरबान कर,
जाति जन्म भूमि और जग को जगा गया॥

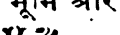

तुलसी जयन्ती झांसी की समस्या-तारनी

(२८)

एरे दीन हीन दास काहे को उदास होत,
पास तेरे रामायन है प्रकाश कारनी ।
जाको एक छन्द माया बन्ध फन्द काट देत,
जाकी एक सूक्ति है सकल शोक हारनी ।
'विन्दु' कवि काटे कर जोरत निहोरत है,
तोहिं अब तारौं कहा बात है विचारनी ।
तुलसी की कविता पढ़त ही पतित तेऊ,
तन-तरणी तो भई तीनों लोक तारनी ॥

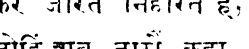

(२९)

माल तुलसी की तुलसी की कविता रसाल,
दोऊ नर तारनी है, दोऊ घर तारनी ।
दोउ कर्म तारनी है, दोउ धर्म तारनी है,
दोऊ वेश तारनी है दोऊ देश तारनी है ।
'विन्दु' कवि दोऊ भक्ति ज्योति उजियारनी है,
दोऊ तन तारनी है दोऊ मन तारनी ।
दोऊ नैन तारनी है, दोऊ बैन तारनी है,
दोऊ कण्ठ तारनी है, दोऊ कर तारनी है ।'

(३०)

भव सिन्धु धार की अपार झकझोरन सों,
झीझंरी भई है नैया पतनाधि कारनी ।
'विन्दु' कवि देखै औ परखै लखै कोटि यत्न,
पाई है न रीति कहूँ अधम उधारनी ।
वेद शास्त्र, कर्म, धर्म, नीति की अनेक बानी,
जानी पहचानी पै न कोऊ कष्ट हारनी ।
किन्तु अब नाथ, काव्य तुलसी की गही हाथ,
बोलो तन तरणो डुबोनो है कि तारनी ॥

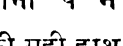

(३१)

मानस मराल पै विहाल भाव फूलन की,
माला गले डाल शुद्ध शोभा है निहारनी ।
मुक्तिप्रद उक्ति रत्नावलि सजाय भलि,
भाँति युक्ति चन्द्रिका है शीस पै सँभारनी ।
धारनी बनी है जो समस्त 'विन्दु' रागन की,
साई बन जायगी महानुराग धारनी ।
तुलसी, तिहारो काव्य ज्योति से मुझे है आज,
भारतीय भारती की आरती उतारनी ॥

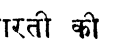

समस्या--लाज

(३२)

खींचत दुशासन सभा में चीर द्रौपदी को,
दीन दुखियारी के शरीर भरी भारी लाज।
नैन 'बिन्दु' ढारैं अति आरत पुकारैं बन,
पै न काहू वीर ने विचारी की सँभारी लाज।
सकल सभा में पायो हितकारी नहीं,
बाला श्री विहारी जू--सों राखा गिरधारी लाज।
ए हो, शिरताज ब्रजराज, जो न आय आज,
मेरी लाज के हा साथ जायेगी तुम्हारी लाज।

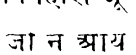

(३३)

जाले परवन्त्रता के कण्ठ बीच डाले देश,
सेवक निराले सहने लगे कसाले आज।
ढाले जायँगे अभी अनेकों जुल्म काले यहाँ,
ग्वाल काँमली में इस देश का छिपाले राज।
आले आले हिन्द के परिन्द 'बिन्दु' पाले गये,
कर में सँभाले भाले टूटे मतवाले बाज।
गोरे रँग वाले के पड़े हैं पाल काले वीर,
एरे कान्ह, काले काले रँग की बचा ले लाज॥

(आगरा में के कुप्रबन्ध पर)

(३४)

होत सरस रघुपति-कथा, बेलन गंज की हाट।
बिछन गलीचा चाहिए, जुरत नहीं है टाट॥

(३५)

जुरत न टाट हाट बाट धारी लोगन सों,
पण्डित जू बाट से बिमुख फिर जावेंगे।
याद रखिये ये दरखास खास कोरट में,
पेशकार चित्रगुप्त जल्द पहुँचावेंगे।
पवन-कुमार गण राज श्री गुसाईं और,
राम कृष्ण नाम भी असेसरी में आवेंगे॥
ऐसे पाँच पञ्चन में पँचमुखी महादेव,
ह्वै के सरपंच याको फैसला सुनावेंगे।

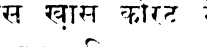

(तुलसी-ग्रन्थ-महात्म्य)

(३६)

देखि देखि पढ़ि पढ़ि सुनि सुनि कानन ते,
केते अधबारे तेरे नाम-यश जापते।
प्यारे भये जग के दुलारे भये राघव के,
मुक्त पार न्यारे भये लोक नीति नापते।
'बिन्दु' कवि एक छन्द मुख सों उचारत ही
स्वर्ग में सिधारन नये जो तीनों तापते।
जमपुर द्वारे के किवारे वै लगे हैं तारे,
तुलसी तिहारे काव्य ग्रन्थ के प्रतापते॥

नोट और सोना

(३७)

सोना चाहता है फिर चाहता सुगन्ध भी है,
नींद में स्वराज्यवान होना चाहता है तू।
होना चाहता है उसे भी अनहोना कर,
बेड़ा दीन देश का डुबोना चाहता है तू।
बोना चाहता है बीज विष मदिरा का 'बिन्दु',
वनिता--विलास को न खोना चाहता है तू।
खोना चाहता है मणि रत्न, रौप्य सोना मंच,
कागजी बिछौना पर सोना चाहता है तू।।

आशीर्वादात्मक

(३८)

गजमुख ज्ञान गुण गौरव बढ़ावै नित्य,
आवै सुख सम्पति सुमति चहुँ ओर की।
पावैं दीन हीन मान दान की प्रवीन्सा सों,
चर्चा चलावैं कीर्ति सागर हिलोर की।
'बिन्दु' कवि असहाय हृदय--मगन इन्दु,
पूरण करहु आश अतिथि चकोर की।
सर्वदा अशीस ह्वै के शीस छत्र छाया करै,
दाया दृष्टि राधा कृष्ण जुगल किशोर की।।

दीपावलि

(३६)

माँगौं ब्रजराज कुछ पूजि के दिवारी आज,
लोक लाज रहित उमंग उमगी रहै।
दीनता अधीनता मलीनता नवीनता लै,
मति गति रीति नीति प्रीति में पगी रहै।
'विन्दु' कवि मोह रात्रि अन्धकार नाशिवे को,
एक ही अनोखी है जुगति जो लगी रहै।
राधिका रमण जू तिहारे ही चरण-नख,
दीप--अवली की ज्योति जिय में जगी रहै॥

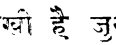

अनुराग कवि

(४०)

आपा मन्जरी से मञ्जु पुष्प तोड़ लेते, मेरु--
मर्कटी पताका के शिखर चढ़ते नहीं।
रसिक जनों को ही प्रसन्न कर लेते हैं,
कठिन काव्य कूटों के निकट कढ़ते नहीं।
यद्यपि सरोवर--सभा को भर देते 'विन्दु',
सीमा से परन्तु एक विन्दु बढ़ते नहीं।
भाव के उपासक हैं, रस के प्रकाशक हैं,
खाली तुक्कड़ों की सी गढ़न्त गढ़ते नहीं॥

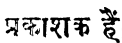

समस्या-भेद भुलाइए

(४१)

सोचिए केवट को कुल को,
चरचा कुछ भीलनी की भी चलाइए।
बानर, निश्चर, बृक्ष पषान,
अनेक प्रमान हैं ध्यान में लाइए।
'बिन्दु' जटायु की जीवनी देखिए,
काग भुशुण्डि का भाव मिलाइए।
ऐसे मिलें जो हरीजन तो
हरियान ही जान के भेद भुलाइए॥

समस्या-रसायन (विषय श्री तुलसी रामायण

(४२)

तेजी करै अँगरेजी बढ़ी,
मचै वंग से जंग भी चौगुने चायन!
लाठी मराठी ठठाती रहे,
इठलाती रहे गुजराती सुभायन।
फारसी खार-सी खाती रहे,
न मरूँगी कभी उरदू के उपायन।
पी चुकी हूँ तुलसी रसना कृत--
रामकथा--सुधा 'बिन्दु' रसायन॥

समस्या-भारत की

(४३)

सोटियाँ भी सब की सहीं और
लँगोटिया छीनी आरत की ॥
गोटियाँ गैर की लाल हुईं,
भरी कोठियाँ डूबी निजारत की।
खोटियाँ भाग्य की क्या क्या कहें,
जिसने कुल कोठियाँ गारत की।
रोटियाँ भी घटीं, बोटियाँ भी छटीं,
चोटियाँ भी कटीं भारत की ॥

समस्या-ताज है

(४४)

धन्य है भारत तेरी दया,
मुझ-सा नहीं और ग़रीब निवाज है।
और को कौर खिलाता रहा,
अपने तन ढाकने की नहीं लाज है॥
खींचती रेल कहीं धन को,
कहीं अन्न को ले कर जाता जहाज है।
ताज पिन्हा कर सैकड़ों को,
खुद आज भी रोटियों को मुहताज हैं॥

चारों समस्यों की एक छन्द में पूर्ति

(४५)

पीर ही भारत की शमशीर है,
पीर ही भारत की बड़ी लाज है।
पीर ही भारत की तप ज्योति है,
पीर ही भारत की छिपी गाज है।
पीर ही भारत की रस 'विन्दु' है,
पीर ही तो सुख शान्ति स्वराज है।
पीर ही भारत की है रमायन,
पीर ही भारत की सरताज है॥

समस्या-चलि के अलभ्य लाभ लोचन को लीजिए

(४६)

जाके पाद पद्म पथ सों परिवार कामधेनु,
बार बार याचत कृपा की कार कीजिए।
पय-सिन्धु बासी जाको रहत उपासी सदा,
वाको कहाँ पय हीनता को दोष दीजिए।
जाको एक बार नाम धोखे हू जपे तो फेरि,
जग में जननी को पयोधर न पीजिए।
सोई पय 'विन्दु' पीवे कीर्ति गोद आई आज,
चलि के अलभ्य लाभ लोचन को लीजिए॥

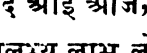

समस्या-यामिनी पतिहि मानों दामली भुलावै

(४७)

सघन निकुंज राधिका को केश पाश जानि,
इन्द्र भ्रकुटीन मिस धनुप चढ़ावै है
दृग कजरारे कारे मेघन ही को घिराव,
केवल कृपा-कटाक्ष 'विन्दु' बरसावै है
विद्रुम रचित अधराधर सुभूमिका पै,
नथ ही कनक को हिंडोरा छवि छावै है।
तामें मुकुता हिलत मन्द मुसकान ही सों,
यामिनी पतिहि मानों दामिनी भुलावे है॥

उदगार

(४८)

उत्तम यही था जग जन्म ही न देता विधि,
देना ही जन्म था तो न देता जन्म नर का।
यदि नर-जन्म ही दिया है तो न देता संग,
देता संग तो न किसी सुन्दर सुघर का।
सुन्दर सुघर का सुसंग तुझे देना ही था--
तो न देता 'विन्दु' भी अनन्त प्रेम-सर का।
प्रेम-'विन्दु' देकर निहाल ही किया तो फिर,
प्यारे से वियोग भी न देता क्षण भर का॥

समस्या–ब्रजधाम को बचाने को

(४६)

कंस के समान अभिमान है प्रधान यहाँ,
बल वसुदेव, देह देवकी सताने को ।
पूतना पिशाचिनी-सी कुप्रथा चली है, देश–
शिशु को असभ्यता का गरल पिलाने को।
कुपित अभाग्य इन्द्र देव कटि-बद्ध ही है,
दीनो के दृगों से रक्त 'बिन्दु' बरसाने को।
आओ नाथ, आओ ब्रजनाथ, शीघ्र आओ,
भारतीयों के हृदय ब्रजधाम को बचाने को ॥

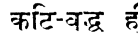

आचार्य प्रवर श्री रामनन्द–जयन्ती पर

(५०)

राम परात्पर ब्रह्म तत्व जो अति अपार है,
वही धाम बन कर सतयुग साकेत सार है ।
त्रेता दशरथ अजिर वही लीला-विहार है,
द्वापर में प्रतिमूर्ति वही रूपावतार है ।
वही राम निज नाममय अमृत 'बिन्दु' सुख कन्द.
कलिकराल में बन गया स्वामी 'रामानन्द' ॥

गीता रत्न माला नामक पुस्तक पर

(५१)

सरल सुभाषा धर्म धारा मयी भागी रथी,
वेद त्रयी पाठ की पवित्र पाठ शाला है।
हिन्दी शुद्ध शब्द संगठित सानुवाद श्रेय,
लेखक हृदय का अनुपमेय आला है।
तुलसी-रचित राम-यश मधु मिश्रण है,
एक एक विन्दु ही पियूष-सिन्धु-प्याला है।
निश्चय परम प्रभु प्रेरेणा प्रभाव से ही,
प्रगटी भजन हेतु गीता-रत्न-माला है॥

षट-प्रकार शरणागति

(५२)

प्रथम उठे संकलप सुखद अनुकूल,
फिर छोड़े जो साधन हों प्रतिकूल।
स्वामी--कृत रक्षा पर हो विश्वास,
मन में हो प्रभु-गुण का विमल विकास।
मुख से बोले शरण तुम्हारी नाथ,
सब प्रकार से रहे दीनता साथ।
षट प्रकार यह है शरणागति—रूप,
यह साधन कर फिर न पड़े भव--कूप॥

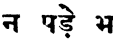

विवाह आशीर्वादात्मक

(५३)

वृषभ पति का पुत्र पूजा नित्य पाया करे,
समयानुसार विघ्न संकट हटाया करे ।
वेद मंत्र विमल स्वतन्त्रता सिखाया करे,
प्रोहित सदा सुनीति पथ को दिखाया करे।
कुल वृद्ध मंडली भी कुशल मनाया करे,
धर्म कर्म ज्ञानादि का मर्म समझाया करे।
दंपति सनेह सिन्धु बढ़ता हुआ सा देख,
सुयशेन्दु शान्ति सुधा 'विन्दु' बरसाया करे॥

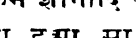

[५४]

प्रिय वर सनेही आज का यह दिवस धन्य महान है।
यह लग्न यह तिथि यह घड़ी स्वर्गीय प्रतिभावान है॥
वह धन्य है मस्तक जिसे भूषण मिला है मौर का।
वह धन्य है मुख जिसने लिया आनन्द है लहकौर का॥
है धन्य सुभग शरीर जिस पर पीत वर जामा चढ़ा ।
है धन्य है वह कर जाकि प्राणी ग्रहण में आगे बढ़ा॥
इससे अधिक अब और क्या आनन्द का सामान हो ।
ऐसे शुभावसर पर हमें क्यों कर हर्ष महान हो॥
कन्या सुशील हो तुम्हें सब काल में सुख शान्तिदा ।
व्यवहार पावन प्रम का इससे करो तुम सर्वदा ॥
आशीर्वादात्मक लिखी जो कुछ सरल कविता वली।
सादर समर्पित है तुम्हें यह प्रेम की पुष्पांजली॥

उपासना

(५५)

प्रेमकूप ब्रह्म है तो ब्रह्म का उपासक हूँ,
भक्ति शक्ति रूप है तो शाक्त कहलाता हूँ।
प्रिय रूप शम्भु है तो शंकर अवश्य ही हूँ,
तारतम्य तत्व तत्ववाद का विधाता हूँ।
व्यापक विरह वेदना का 'विन्दु' विष्णु ही हूँ,
देखता हूँ सब में सभी को दिखाता हूँ।
जिस जिस रूप में झलक पारहा हूँ तेरी,
उसी उसी कूप का पुजारी बन जाता हूँ॥

(५३)

दीपक के प्रति

ज्योति जलने को जीवनी तू जानता है यही,
ज्योति बढ़ने से दीन दीपक ढलेगा तू।
उमड़ पड़े पतंग प्रति शोध लालसा में,
कब तक कालिमा के कण उगलेगा तू।
निपट चुका है पात्र का से भी सनेह 'विन्दु',
तूलिका के कूल में न भूलि के पलेगा तू।
जीवन अनेक मिले तो भी जला देंगे क्योंकि,
जितना जलेंगे हम उतना जलेगा तू॥

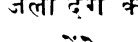

पृथ्वी की प्रार्थना

(५७)

जाते ही विरञ्चि की सभा में धरणी ने कहा-

सृष्टि में अनर्थ आज कैसा हो रहा है हाय !
खींचा जा रहा है धर्म कर्म वादियों का चर्म,
रक्त सज्जनों का रम्य धाम धो रहा है हाय !
'विन्दु' कवि कुटिल कलंकियों में सभ्यता,
विद्या बुद्धि बल का खजाना खोरहा है हाय
दावानल दीनों पर उबल रहे हैं दैत्य,
फिर भी अधीनों का विधाता सो रहा है हाय ।

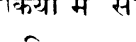

(५८)

महिदेव अदेव बने न कहीं,
सब देव दबें न हिमाचल में ।
रवि चन्द्र लड़ें न कहीं नभ में,
मिल जाय न सुधा हलाहल में ।
बरसे न कहीं धन शोणित 'विन्दु'
करें प्रलय करता बल में ।
धरणी धर को डर है कि कहीं,
धँस जाय धरा न धरातल में ।

समस्या-सिखायतो दो

(५६)

[जेण्टिलमेन भक्त की कृष्ण से प्रार्थना]

अब लन्दन म्यूज़िक मास्टरो में,
घनश्याम जी नाम लिखाय तो दो ।
ग्रेजुयेट दलों को गोपाल नया,
कलिकाल रास दिखायतो दो ।
कवि 'बिन्दु' है सीखा पियानों यहाँ,
स्वर बाँसुरी के भी सिखायतो दो ।
ब्रज गोपिकाओं को ब्रजेश ज़रा,
इँगलण्ड का डान्स सिखायतो दो ॥

(श्याम सुन्दर ! अब भारत में इस प्रकार आना)

(६०)

बन्सी को बिसारि हाथ में सिगार धार लेना,
मोर पंख त्यागि टोपा पश्चिम के ढंग को ।
कम्मर पितम्बर न लेना श्याम सुन्दर जी,
कोट पेन्ट ड्रेस सिलवालो निज अंग को ।
'बिन्दु' कवि चक्र के बजाय कारतूसी कहीं,
ढूँढ़लो दुनालो काम आने वालो जंग को ।
एहो नन्द छौना गोरा बनकर आना यहाँ,
भारत में क़द्र ही नहीं है काले रँग को ॥

बी० ए० पन्चक--

[बी० ए० पास ग्रेजुएट की करुणा कथा]

(६१)

एबी० से पढ़े तो क्लास बी.ए. मे उलट गये,
फिक्र पड़ी लाइफ में एक्सी डेन्ट होने की।
मैडम मिली है जो बनाती रोज डैम फूल,
दुर्दशा है भारतीय युवक खिलौने की।
हाय अँगरेजी की पढ़ाई ने उड़ाई खाक,
'विन्दु' कवि शक्ति भी गँवाई खाक होने को।
चाय चाँकलेट दूं कहाँ से मेम साहिब को,
होटलों में सर्विस नहीं है प्लेट धोने की॥

जैसे बीज-वैसे फल

(६२)

मास्टर जी के कड़े हन्टर हजारों पड़े,
भर भर कर फीस घर खाली कर दीये हैं।
लेकर किताबें ताबे जिन्दगी बने हैं ऋणी,
लौट पौट तेज़ खूब घोट घोट पीये हैं।
'विन्दु' कवि आठ से अठारह बरस तक,
जी, जी, के मरे हैं और मर मर जीये हैं।
किन्तु इस बी. ए. ने तो असफल रक्खा सदा,
वैसे हो मिले हैं फल, जैसे बोये! बीये हैं॥

बी० ए० वालों का स्वास्थ्य

(६३)

बदन गठीला चमकीला हाय ढीला पड़ा,
पीला पड़ा रङ्ग सख्त आफत अमेज़ी है।
पुष्ट बालकों का रक्त पान करने के लिए,
कालेजों में किसने ये कालिकासी भेजी है॥
'बिन्दु' कवि बी. ए. की पढ़ाई पराधीनता है,
जीतेजी है दीनता, मलीनता, मरेजी है।
नेज़ी गई आँखकी, करेजी कमजोर भई,
ऐसी अँगरेज़ी से भली ता रँगरेज़ी है॥

बी० ए० पास की बुद्धिमत्ता

(६४)

प्रथम किताब किंग प्राइमर सम्हालते ही,
कैट, फैट, रैट, शब्द बुद्धि को भुला दिया।
इन्टरेन्स क्लास पास होते ही विकास बढ़ा,
न्यूज पेपरों से ग्रन्थ वैदिक बभादिये।
'बिन्दु' कवि कोट, पेन्ट कॉलर कमीज़ डाट,
सुलझे पुराने ठाट बाट उलझा दिये।
लेम्प फोड़ दीये, बिजली के बलब लीये,
इस बी. ए. ने घरों के हाय दीये भी बुझादिये॥

बी० ए० पास नौकरी छूट जाने पर

(६५)

बाई हुई बड़े जो किये थे हलुवे को भाँति,
हाय वही आखिरी में लोहे के चने लगे।
क्लास गेट पै खड़े रहे जिन्हें समेटने को,
वेहाँ सारटो फ्रिकेट प्राण खेंचने लगे।
'बिन्दु' कवि सैकड़ों ही बी० ए० पास बाबू लोग,
कष्ट सिन्धु कर्मवट से उलं चने लगे।
चालू नौकरी मे जब ढालू होगये तो,
भालू फैशन का त्यागि के कचालू बेचने लगे॥

लालाजी की कमाई किसने लूटा?

(६६)

तान कस कस के सरंगी ने सुखाये प्रान,
ठनक मँजीरे ने दिखाई खूब चालाकी।
गोल गुमकार में दबाया तबले ने गला,
छागई पुकार वाह वाह बोल वाला की।
'बिन्दु' कवि हाव भाव का प्रभाव ऐसा पड़ा,
भूल गई याद सेठजी को कण्ठी माला की।
छागई सफाई बचने न पाई पाई एक,
बाईजी के नाचने कमाई लूटी लाल की॥

सप्रबन्ध न होने पर धर्मशाला बनवाने का परिणाम

(६७)

द्वारे पै गये तो दरवान ललकारे देत,
करत कनिन्दा ध्यान झोली के मसाला में।
नौकर न कोठरी बतावत रुपइया बिन,
अतिथि विदेशी होत व्याकुल कसाला में।
'विन्दु' कवि चूल्हा, चारपाई, को किराया लेत,
राति नौ बजे से बन्द कोन्हे देत नाला में।
ऐसी झोल झाला धर्मशाला बनवाय बैसो,
लाला जी को कुटुम्ब लैके जात जमशाला में॥

पण्डित की पवित्रता पर कुत्ते का जवाब

(६८)

पण्डितजी खाने को "कुकर" में बना रहे थे,
उसी वक्त पास एक कुत्ता चला जाता है।
बोले यूँ बिगड़ कर विप्रजी कि बेवकूफ,
भीतर रसोई में तू कहाँ घुसा आता है।
'विन्दु' कवि रुक कर बोला बुद्धिमान स्वान्,
इस शुद्धता पर अचम्भा मुझे आता है।
इतनी घृणा है क्यों जनाव मुझ! 'कूकर' से,
आपका तो भोजन ही कूकर' बनाता है॥

हिन्दोस्तानी ग्रेजुएट के मुख से उसकी योरपियन पत्नी की प्रशंसा

(६९)

वाइफ़ नसीब किसी और को न होगी ऐसी,
जैसी मन माफ़िक मिली है बाई चान्स में।
चीन में कलायें पढ़ी, वेद जर्मनी में पढ़ी,
नीति पढ़ी लन्दन में काम शास्त्र फ्रांस में।
कपट सनेह 'विन्दु' का अथाह सिन्धु भरा,
दक्ष पेंटरी में और इङ्गलिश डान्स में।
उमर दराजी में नहीं है कम आजी से भी,
बापसा मिला है एक बेटा एडवान्स में॥

बीसवीं सदी में बीबी क्या हैं? और बाबू क्या हैं?

(७०)

बीबी पगड़ी हैं बनी, कुरता बने हैं बाबू,
बीबी हैं इजारबन्द, बाबू पायजामा हैं।
बीबी वायलन् गोल, बाबू जो फटीसी ढोल,
बीबी हैं तराना, और बाबू सा, रे, गा, मा, हैं।
'विन्दु' कवि आन वान शान या ज़बान में भी,
बीबी हैं फुलिस्टाप, बाबू डैस, कॉमा हैं।
बीसवीं सदी में जहाँ देखा, वहाँ देखा यही,
बैरिस्टर बीबी, और बाबू खानसामा हैं॥

एक कवि सम्मेलन की समस्या थी "पीर"
उसकी प्रश्नोत्तरी में पूर्ति।

(७१)

नोंचते खसोटते हैं कौन पथिकों को भला,
तीरथ के पण्डे और पथ में पड़े फकीर।
सेठ साहूकारों का हमेशा मूड़ते हैं कौन ?
नर्त्तकी के साथ जो बजाते तबला मँजीर।
'विन्दु' कवि कौन पुजवाते नित्य ! कलदार ?
देखते जो कुण्डली कराल, कर की लकीर।
मुफ्त माल खाकर पसार टाँग सोते कौन ?
हिन्दुओं के गुरू लोग और मुस्लिमों के पीर॥

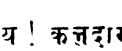

एक कवि सम्मेलन की समस्या थी "चरते हैं"
उसकी पूर्ति घूस खोर ज़मीदार।

(७२)

चूँ करते न किसान कभी, दुगने कर से घर को भरते हैं।
हूँ करते न पचास बिना, न हज़ार बिना मुख हाँ करते हैं।
'विन्दु' वृकोदर बैल बने, तन को हनते, धनको हरते हैं।
मूसर से धमधूसर दूसर, ऊसर भूमि प्रजा चरते हैं॥

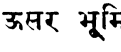

एक कवि सम्मेलन की समस्या थी 'भेद भुलाइये'
श्रीकृष्ण से प्रार्थना में पूर्ति।

(७३)

द्वापर के कमलोधरजी, कलि काल में कूट कला दिखलाइये।
गोकुल की उस गोप समाज को, पोप समाज के साथ मिलाइए।
'विन्दु' अशिक्षित इण्डियामें, इङ्गलेण्डको शिक्षित चाल चलाइये।
स्वेद नहीं बनें वेद लवेद, पे काले सफेद का भेद भुलाइये॥

श्रद्धालु श्रोता कथा वाचक से कह रहा है

(७४)

धन्य बड़े भागनै पधारे कथा वाचक जू,
कहिकै कथा श्री रामचन्द्र पग लागियो।
श्रोतन के सामने बनाय भाषा भाव भक्ति,
शोर करि बारह बजेलौं राति जागियो
गाँठि ते खरच करि भोजन को ऋद्धि सिद्धि,
'विन्दु' कवि बीचते निराश ह्वै न भागियो।
सादर कथा के हैं सुनाइया हम भइया किन्तु,
पूजा की समइया पै रुपइया जनि माँगियो॥

विदाई की सच्ची राम लीला का वर्णन

(७५)

देखी थी न ऐसी जैसी देखी राम लीला आज,
कैसी करुणा थी वा समैय्या की विदाई में।
दर्शक असभ्य सभ्य जानकार या गँवार,
रोये सभी राम रघुरैय्या की विदाई में।
'विन्दु' कवि मिथिला पुरी के नर नारि रोय,
रनिवास रोया चारों भैय्या की विदाई में।
जानकी दुलहैय्या की विदाई में जनक रोये,
रोये श्री महन्तजी रुपैय्या की विदाई में॥

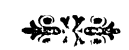

जोरू भक्त का सप्रमाण उत्तर

(७६)

सीता जी को खुश करने के लिये रामचन्द्र,
शंकर धनुष को उठाकर चढ़ाते हैं।
राधाजी को खुश करने के लिये कृष्णचन्द्र,
नख पै पहाड़ भी उठाकर दिखाते हैं।
'विन्दु' कवि द्रौपदी को खुश करने के लिये,
पार्थ धनु बाण को उठाकर चलाते हैं।
हम क्या ग़ज़ब करते हैं ? जो जनाब आज,
जोरू की खुशी के लिये जूतियाँ उठाते हैं॥

"कृपण" उसकी दमड़ी की प्रशंसा

(७७)

लाखों बार ढूँढ़ने से मिलता पता ही नहीं,
मन बुद्धि से भी दूर काम सौ करोर है।
कीर्ति करने में करतार से नहीं है कम,
जिसके प्रताप से तुम्हारा खूब शोर है।
'बिन्दु' कवि पातिव्रत धर्म में शिरोमणि है,
क्षण भर को भी ता न जानो किसी ओर है।
राम कृपण के भी तोड़ने से टूटती है नहीं,
दमड़ी तुम्हारी शम्भु धनु से कठोर है॥

आज कल के कथा वाचक के लक्षण

(७८)

विद्या बुद्धि विमल विचार का नहीं है काम,
नई रोशनी के साँचे में ढला जरूर हो।
वेद शास्त्र व्यास के पुराण पूछता है कौन,
रटा हुआ खूब किस्सा मसला जरूर हो।
'बिन्दु' कवि शुद्ध कथा वाचक वही है, जिसे,
ठुमरी गजल का मिला, गला, जरूर हो।
पूजा पाठ पोथी पास में हो या न हो! परन्तु,
हारमोनियम और तबला जरूर हो॥

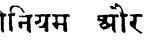

रंगीला कथा वाचक

(७६)

लाल पटका रँगा रँगीले कथा वाचक का,
तेल में मसाले के रँगे हैं बाल ठीक से।
इत्र मुश्क अम्बर से कान भी रँगे हैं खूब,
मस्तक रँगा है रोलिका की गोल टीक से।
'बिन्दु' कवि हाथ भी रँगे हैं हिना रंगत में,
आँखें भी रँगी हैं सुरमे की स्याह सींक से।
दांत भी रँगे हैं मुख कंज भी रंगा है और,
पन्ने भी पुराण के रँगे हैं पान पीक से॥

जेण्टिलमैंनी वेष से लाभ

(८०)

संगत सिखाती सदा ऊँची पतलून हमें,
नीचे बैठने की बुरी बान पड़ती नहीं।
टाई और कालर में मौन व्रत पालन है,
कसे हुए गले की ज़बान लड़ती नहीं।
'बिन्दु' कवि पेटी देती पेट को अहार लघु,
कोई चीज आंतों में अधिक अड़ती नहीं।
चश्मे के लगाने का यही है फ़ायदा जनाब,
चश्मों में किसी की टेढ़ी चश्म गड़ती नहीं॥

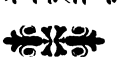

आज कल की सभा का उद्देश्य

(८१)

श्रोता सज्जनों का फ़र्ज़ है कि काना फूसियो से
बार बार शोर करते हो रहें भन्न भन्न।
स्वागत समिति का यही है मुख्य सेवा धर्म,
घड़ी घड़ी कहदें कि धन्यभाग धन्न धन्न।
'बिन्दु' उपदेशकजी वाणी की दुनाली से ही,
शब्द कारतूस दागते ही रहें दन्न दन्न।
प्रेसीडेन्ट साहब घड़ी को सामने ही रख,
घन्टा देख देख के बजाते रहें टन्न टन्न॥

सभा में जाने वालों को कुछ न कुछ मिलता ही है

(८२)

आते हैं अधिक भीड़ देखने को कुछ लोग,
फल यह मिलता कि कन्धे छिल जाते हैं।
कुछ प्रेमियों को उपदेशकों के भाषण में,
वह जोश मिलता कि दिल हिल जाते हैं।
'बिन्दु' कवि कुछ सज्जनों को मिलता है गान,
राग रागिनी से रोम रोम खिल जाते हैं।
कुछ लोग कुछ भी न पाते हैं बिचारे उन्हें,
किसी भले मानस के जूते मिल जाते हैं॥

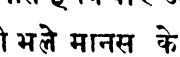

बारहमासी बसन्त

(८३)

क्लास में हो पास पाते, प्रिया नहीं पास पाते,
करत उपास याते पोरो परो तन-तन्त ।
चश्मा लगावन ते चरमैं लड़ावन ते,
चश्मा बहावन देखें हग पीतवन्त ।
पारिया प्रवानता से मज्जन विहीनता से,
चरस मलीनता से पीरे भये श्वेत दन्त ।
कालेज कढ़न्तन पै नारि बिन कन्तन पै,
भारतीय सन्तन पै बारो मास है बसन्त ॥

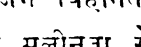

कुदान का प्रभाव

(८४)

विप्र, क्या है, प्याज, अरे खाते हो क्या, हाँ सविधि,
विधि क्या है ? मांस पर मन चलता है जब ।
हैं क्या मांस मद्यो भी हो ? हाँ सविधि, विधि क्या ?
कभी 'विन्दु' प्याला मदिरा का ढलता है जब ।
तो क्या मद्यपी भी हो ? हाँ हूँ सविधि, विधि क्या है ?
वेश्या-गृह जाने को ये जी मचलता है जब ।
वेश्या-गृहगामी भी हो ? हाँ हूँ सविधि, विधि क्या ?
पापी यजमान से कुदान मिलता है जब ॥

कवि और कृपण

(८५)

कृपण रईस का सुनाई कविता कवीने,
'बिन्दु' बिन्दु पर की प्रशंसा भर भर के।
बोला-कल आना, दूसरे दिन जो गये कवि,
पूछा--कहाँ आये तुम कौन हो किधर के।
कवि ने कहा--कुछ इनाम दीजिए हुजूर,
बोला वह--क्या यहाँ जमा गये थे धर के।
कविता सुनाकर प्रसन्न तुमने था किया,
हमने प्रसन्न किया वाह वाह करके॥

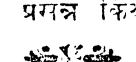

जैसे प्रभु वैसा भक्त

(८६)

आपकी सुवर्ण-द्वारिका के मणि रत्न खम्भ,
हेमकूट के भी मद मान कूटने लगे।
नारियों के हृदय लुभाने के लिए ही आप,
शिशुपन से ही दधि दूध लूटने लगे।
आपही के संगी हैं, सगा हैं अंश 'बिन्दु' हम,
आप के गुणों से क्यों नाते टूटने लगे।
कामिनी कनक जब आप से ही छूटे नहीं,
तो फिर भला क्यों हम से ही छूटने लगे॥

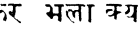

व्यसनी अपव्ययी और साधु की प्रश्नोत्तरी

(८७)

किसी व्यसनी से कहा साधु ने--कि--धन आप,
व्यर्थ फूँकिये न बात कान डालता हूँ मैं।
बोला व्यसनी--कि--आप जानते नहीं हैं इस,
धन से उचित व्यवहार पालता हूँ मैं।
'विन्दु' कवि यह कहता है मुझसे कि--तुझे,
धर्म से निकाल नर्क में ही डालता हूँ मैं।
और कहता हूँ मैं कि--ठहर पिशाच तुझे,
शीघ्र अपने ही घर से निकालता हूँ मैं॥

(८८)

बोले साधु--यदि घर से निकालना ही है तो-
किसी शुभ कर्म में ही क्यों न आने दीजिए।
कहा व्यसनी ने--नहीं नहीं, मदरा न इस,
नीच को तो नीचता फल पाने दीजिए।
'विन्दु' यदि होता शुद्ध यह तो कराता धर्म,
मैं भी कहता कि--पुण्य में लगाने दीजिए।
किन्तु यह धन है महा अधमता का मूल,
ऐसे नारकी को नर्क में ही जाने दीजिए॥

कृपण का अपनी कृपणता पर, युक्ति पूर्ण उत्तर

(८६)

सूती रेशमी अनेक थान हैं दुकान पर,
किन्तु तिन काटता हूँ मैं फटे पुराने से।
व्यञ्जन बहुत से बनाते हैं घर के लोग,
पेट भर जाता मेरा है चने चबाने से।
'बिन्दु' कवि चाहे एक मास का उपास भी हो,
लेता हूँ छदाम भी नहीं कभी खज़ाने से।
कृपण नहीं हूँ इस कारण बना हूँ दीन,
भगवान रीझते हैं दीनता दिखाने से।

कलि काल का प्रभाव

(९०)

क्या ही खूब चाल है कराल कलि देवतों की,
सर्व नाश होने के प्रयत्न ठने जाते हैं।
ढोंगी ढंग वाले धूर्त्त चाभते हैं माल पुये,
चतुर गुणी जन छटाँक चने पाते हैं।
'बिन्दु' कवि गप्पी, गोप गुन्ज झमकाते गले,
साक्षर सुबोध भीख माँगकर खाते हैं।
शूर, बल पूर, मजदूर होरहे हैं और—
क्रूर मग़रूर, जी हुज़ूर, कहलाते हैं॥

परिवर्तन

(६१)

ज़माने की हवा बदली दशा कैसी बुरी आई ?
पुरानी चाल पर फ़ैशन की है काली घटा छाई ।
कभी मस्तक पे मलयागिरि का चन्दन लेप करते थे,
मगर मलते हैं अब तो हैज़लीन पाउडर की चिकनाई ।
गले में थीं कभी रुद्राक्ष की तुलसी की मालायें,
मगर बँधन लगी गर्दन में अब कालर पे नेकटाई ।
कभी जल जान्हवी का रस हृदय को शुद्ध करता था--
पर अब सोडे की बोतल बन गयी भागीरथी माई ।
जो सज्जन सर्वदा वैदिक रिचायें याद करते थे,
उन्हें अब याद है यस सर, गुडविनिंग थैंक्स गुडबाई ।
जो पहले वस्त्र जो उदर में शहद का 'बिन्दु' देते थे,
वह अब करते हैं फादर के लिए ह्विस्की की सप्लाई ।

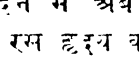

टर का डर

(६२)

इण्डिया में बन गया है जब से दुश्मन टर का डर,
तब से हर मिस्टर की टर पर छा गया लीडर का डर ।
क्या अदालत में भला मुलाज़िम करे सच्चा बयान,
टर इधर डिप्टी कलक्टर का उधर प्लीडर का डर ।
मेडिकल कालेज में ख़तरा है मरीजों के लिए,
डाक्टरों का टर से भी ज्यादा है कम्पाँडर का डर ॥

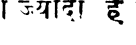

आँख से आँसू बहाये नाचें गायें किस लिए ?
ऐक्टरों की टर पै गर गालिब न हो पाउडर का डर।
'विन्दु' तू इन सब डरों से चाहता है छूटना--
तो हमेशा दिल में रख उस सृष्टि के ईश्वर का डर।

पतित और पतित पावन

(९३)

अधम उधारन हो मिलो अधम 'विन्दु' को साथ।
हौं पतितन में नाथ हौं, प्रभु पतितन के नाथ॥

(९४)

अश्रु 'विन्दु' प्रभु-पाणि सों; कहत सँभारहु लाज।
हम गरीब मुहताज हैं तुम गरीब शिर ताज॥

(९५)

प्रभु प्रद मानन सों तरत, 'विन्दु' तरन की आस
ये पावन के पास हैं, हम पावन के पास॥

(९६)

नातो क्यों न निबाहि हैं, नाथ 'विन्दु' के साथ।
हम पतितन में नाथ हैं, प्रभु पतितन के नाथ॥

(९७)

पावन हूँ जाचत सदा, जिन पावन को प्यार।
नित पावन पर 'विन्दु' है, पतितन को अधिकार॥

पीर

९८

नाड़ी जानो वेद्य ने, गति जानी कपि बीर।
तीर चाट जानी लषण, रघुबर जानी पीर॥

९९

गणपति, गिरिजापति, गिरा गुरु भूसुर, सुखन्द।
शुभ बिवाह के कार्य में, करहु सकल आनन्द॥

१००

कृत द्वापर त्रेता गरब, कलि गुण ते भो मात।
ज्यों कस्तूरी गंध सों, मलय कपूर लजात॥

१०१

रूह मुश्क अम्बर तथा इतर हजारन जात।
इक प्याज की गंध में सब फीके परिजात॥

१०२

विद्या रूप सुजातिधन इत्यादिक अभिमान।
जब लगि उर मँह बसत हैं, मिलत नहीं भगवान॥

१०३

तुलसीतरु सम तनहिं करु, मुख तुलसी दल राखु।
कर तुलसी की माल गहु, तब तुलसीकृत भाखु॥

१०४

बिन प्रीतम के नरक, है सप्त स्वर्ग को बास।
नरक स्वर्ग से अधिक है, जौं निज प्रीतम पास॥

१०५

प्रेमिन के हित अन्त कहुँ, रच्यौं नरक यम नाहिं।
तबही है यम पातना जब ठिग प्रीतम नाहिं॥

१०६

शेष शहस फन विष धरै, तऊ न रहत उतंक।
एक 'विन्दु' वृश्चिक धरै चलत उठाये डंक॥

१०७

स्वर्ण सुमनदा भूमि से, लिया तीन ने मान।
या सेवक या शूर नर, या विशेष विद्वान॥

१०८

वृद्धि कर्म अति श्रेठ है, बाहु कर्म है बीच।
जंघा कर्म जघन्य है, भरि कर्म अति नीच॥

१०९

साधु तपस्वी चोर खल, इन चारों का संग।
यों बसता है देह में ज्यों कपड़े का रँग॥

११०

सम्थों के घर कम नहीं, होते यह सामान।
सीतल जल भाषण मधुर, आसन वासस्थान॥

१११

तनक कांकरी परत ही, मुंदत नयन तत्काल।
वे नयना क्यों ना मुदें, जिनहि परेहु नँदलाल॥

११२

स्वास स्वास में सुरति हो, शब्द शब्द में नाम ।
बिन्दु बिन्दु में बिरह हो, रोम रोम में राम ॥

११३

प्रभुता पद के पद गहे, पद पद पीड़ा त्रास ।
बिपद हरण है परम पद, प्रभु पद पंकज पास ॥

११४

कै तो मन लागे नहीं कोटिन करो उपाय ।
लागे तो फिर ना हटे, प्राण रहै या जाय ॥

११५

मन और माखी, दुहुन की, एकहि प्रकृति लखात ।
छन में मोहन भोग पर, छन में मल पर जात ॥

११६

बकता में भर पूर हो, नहीं दुबकता होय ।
बक बक बकता हो सदा- कलि में बकता सोय ॥

११७

तन मिलिबो नहिं मिलन है मिलिबो है मन माँहि ।
कमल कीच नहिं मिलत है, शशि चकोर मिल जाहिं ॥

११८

मेरे जीवत लंक में पग न धारि सकेउ राम ।
तुमरे देखत आजु मैं, जात तुम्हारे धाम ॥

११६

लोक वेद अरु धर्म की, साधु नीति की रीति ।
पच राति जेहि उर बसें, तेहि सन करिये प्रीति ॥

१२०

चाहिये मित्र विपत्ति में, तन में चाहिये पित्त ।
वित्त चहिये व्यापार में, हरि में चाहिये चित्त ॥

१२१

एक साधु हैं ठेट के, दूजे साधु लपेट ।
तीजे साधु चपेट के, चाथे केवल पेट ॥

१२२

पूर्ण विरत हैं ठेट के, संपति नसे लपेट ।
चार लवार चपेट के मंगन साधू पेट ॥

१२३

हाय हाय कैसी कठिन, या सनेह को काम ।
दूरि दूरि अति ही भजौं, तऊ भजौं तोहि श्याम ॥

१२४

अरी क़लम तू शीश को कलम करै है नाहिं ।
तौ न पहुँचि पै है कबहुँ प्रियतम के कर माहिं ॥

१२५

हौं विधि गिरिवर ना बनौं, काली फन बन जाऊँ ।
परयौ रहौं प्रभु पाँव बिच, कर शिर चढ़न न जाऊँ ॥

१२६

अधरन की मुरली बनौं, बनौं गरे की माल।
गोपिन की गागर बनौं, विहँसि गहैं गोपाल॥

१२७

प्रेम रोग की वेदना, वैद बतावै काह।
नाड़ी सौं किमि लखि परै, उठी करेजे आह॥

१२८

भीलनि फल जूठे चखे का अचरज कै बात।
ग्वालन की हरि प्रेम वश, हँसि हँसि गारी खात॥

१२९

कर्म भुगति पछितात को, कोऊ भुगति छुटि जात।
लकड़ी जरि कोयला बनत, सब कपूर जरि जात॥

१३०

जगत मलिन व्यवहार सब; दिन भर देखत जात।
याही ते संध्या समय, भानु मलिन होइ जात॥

१३१

अहं अहं दोऊ कहैं, ज्ञानी दुनियां दार।
ऐक जगत को सार है, दूजौ जग को भार॥

१३२

ज्यों सागर की बूँद से, सागर स्वाद न जात।
त्यों ईश्वर के अंश में, ईश्वर तेज लखात॥

१३३

कर्म किये कछु होत नहिं, भाव लिये सब होय।
तिय कुच पति सुत दोउ गहैं, भाव दुहुन के दोय॥

विविध

१३४

इश्क लेला का दिले-मजनूँ में यों रहने लगा।
लैला-लैला कहते कहते-ला-इलाह कहने लगा॥

१३५

इरादा करते हैं सब ख्वाहिशं मिल कर कहें तुम से।
मगर जब तुमसे मिलते हैं तो ख्वाहिश रह नहीं जाती॥

१३६

कर नहीं सकते अगर सच्चा तो झूठा हो सहो।
पर मेरे सरकार, वादा भा तो कर दीजे सही॥

१३७

सारी दुनिया से हम अनजान बने जिनके लिए।
हाय हम से वही अनजान बने बैठे हैं॥

१३८

न हमको धन से मतलब है, न हमको धाम से मतलब।
हमें तो सिर्फ है सरकार के बस नाम से मतलब॥

(१३९)

हमारे देश में श्री राम का अबतार क्यों था ?
इसी अवतार से संसार का उद्धार क्यों था ?
सलोने श्याम सुन्दर से सभी को प्यार क्यों था ?

ज़माना उस छटा उस शक्ल पर बलिहार क्यों था ?
ये सारा राज़ पाया है उन्हीं हर्फों में हमने ?
निकाले हैं जो मोती दास तुलसी की कलम ने ॥

(१४०)

यों तो कहने के लिये रंग हैं दुनिया में सभी।
रंग वह है कि जो चढ़ जाय तो उतरे नहीं।
रंग लाखों हैं मगर सबका असर जाना है।
दम में चढ़ता है तो दमभर में उतर जाता है।
रंग सब खुद में छिपाले ये सिफ़त श्याम में है।
रंग अपना-सा बनाले ये सिफ़त श्याम में है॥

(१४१)

यों न हो सरकार हम पर कज निगाही आप की।
हम ग़रीबों से है सारी बादशाही आप की।
गर गुनह गारों की कुछ हस्ती न दुनियाँ में रहे।
तो भला किस पर चलेगी शाने शाही आप की॥

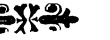

(१४२)

और कुछ मालूम करना भी नहीं मालूम है।
सिर्फ़ इतना ही हुआ हासिल तजुर्बा प्रेम का।
शौक़े दिल दर्दे जुदाई आह आँसू और तड़प।
पाँच जड़ियों से बना करता है नुसख़ा प्रेम का॥

(१४३)

न करो श्याम, इनायत की नज़र तो न सही।
गो नज़र वह ही सहो पर कभी नज़र तो करो॥

(१४४)

हाले दिल ग़ौर से सुनती है तुम्हारी तस्वीर।
मगर जवाब में हूँ-हाँ कभी नहीं करती॥

(१४५)

सम्हालना निगहे तीर न चल जायँ कहीं!
मेरे दिल में जो है अरमाँ न निकल जायँ कहीं?
ज़ख्मे दिल का तो नहीं डर है, डर इस बात का है-
आतिशे ग़म से तेरे तीर न जल जायँ कहीं॥

(१४६)

कृतघ्नी तथा शास्त्र-मर्याद नाशक।
सदा निन्द्य नास्तिक पथों का प्रकाशक।
अशुचि हो कि--या शौच को जा रहा हो।
विमल वस्तु पूजार्थ कुछ ला रहा हो।
उदर भर रहा हो कि-या सो रहा हो।
सभा श्राद्ध में हो कि--तन धो रहा है।
कहीं यज्ञ तर्पण हवन कर रहा हो।
किसी ध्यान में हो भजन कर रहा हो।
सदुपदेश का वाक्य इस पर बना है।
कि इन को नमस्कार करना मना है॥

(१४७)

हस्त रेखा देखने वाला, जुआड़ी, वैद्य, भाट।
पूर्व तस्कार, मित्र, अरि, या जो करे व्यापार हाट।
विदुर ने धृतराष्ट्र से वर्णन किया है नीति पाठ ।
साक्षी में आ नहीं सकते कभी उपरोक्त आठ ॥

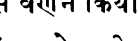

(१४८)

सभा नहीं वह जहाँ वृद्ध विद्वान नहीं हो।
नहीं वृद्ध वह जिसने धर्म कथा न कही हो।
धर्म-कथा वह नहीं न जिस में सत्य विमल हो।
सत्य विमल वह नहीं कि जिस में मिश्रित छल हो॥

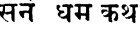

(१४९)

यदि असत्य हो कहना हो तो कुछ न कहे नर ।
कुछ कहना हो हो तो बोले सत्य बचन वर।
सत्य बचन कटु कुटिल न हो, हो मञ्जु मधुरतर।
मञ्जु मधुरतर होकर भी हो धर्मधुरन्धर ॥

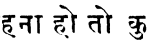

(१५०)

जिन पुरुषों से नाम धर्म विख्यात परम है।
उन की निन्दा करना ही अपराध प्रथम है॥

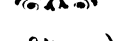

भेद भाव शिव, विष्णु नाम में जो धरते हैं,
बन द्वितीय अपराध नाम का वह करते हैं।
नाम मंत्र दीक्षा जिन गुरु से मिली सही है,
उन को निन्दा हो-तृतीय अपराध यही है।
मन में ईश्वर के परत्व का भाव न भरना,
है चतुर्थ अपराध शास्त्र श्रुति, निन्दा करना।
पंचम यह अपराध सर्वथा है प्रमाद का,
दोषारोपण करे नाम से अर्थवाद का।
षष्ठ यह अपराध कि-प्रतिदिन प्रबल पाप हो,
और पाप हरने का हरि का--नाम जाप हो।
सप्तम यह अपराध कि-मख, व्रत, दान हवन से,
जो फल मिलता है वह फल हरि-नाम भजन से।
विमुख अश्रद्धावान-नाम से मन लगाये,
अष्टम यह अपराध कि-उस को नाम सुनाये।
नाम कथा या नाम श्रवण कर प्रेम न आये,
तो निश्चय यह नवम नाम अपराध कहाये।
नाम छोड़ कर करे अहंमयता का मण्डन,
यही नाम अपराध दशम कहते हैं सज्जन।
यदि बन जाये भूल से इन दश में कुछ दोष,
तो हरि नाम स्मरण ही करता है निर्दोष॥

(१५१)

यों तो भरने को सभी आह भरा करते हैं।
आह वह और है जो अर्श हिला देती है॥

(१५२)

तमाशे की है सूरत इस जहाँ की महवे रानाई।
तमाशा तू न बन इनका, फ़क़त बन जा तमाशाई॥

(१५६)

जानते हैं कि जुदाई में मज़ा इश्क़ का है।
इस लिए मिलते नहीं, बात बना जाते हैं।
हाँ मगर दर्दे जुदाई भी कहीं भूल न जाय।
इस लिए छेड़ने कुछ ख्वाब में आजाते हैं॥

(१५४)

अगर कुछ इश्क़ की पहचान है तो है जुदाई।
अगर आशिक़ का कुछ सामान है तो है जुदाई।
अगर आहों का कुछ अरमान है तो है जुदाई।
अगर उल्फ़त में कुछ ज़ान है तो है जुदाई।
ये माना दर्द है, दुख है, तड़पना है, क़ज़ा है।
मगर मिलकर बिछुड़ने में मुहब्बत का मज़ा है॥

(१५५)

कहना तो बहुत कुछ था मगर तुम को देख कर ।
अब सिर्फ ये कहना है-कि-कहना नहीं है कुछ ।।

(१५६)

जो सच पूछो तो भगवन् यह समर इतिहास वर्षों तक-
तुम्हारी हार मेरी जीत का डंका बजायेगा ।
कि मेरे देखते लंका में तुम आने नहीं पाये ।
तुम्हारे देखते रावण तुम्हारे धाम जायेगा ।।

(१५७)

यह तो बतला दे भला मुझ को कोई ।
कब नहीं पड़ती है किस दौलत पै खाक ।
फिर भला इस खाक के पुतले को यार ।
नाज़ हो हिर्सो हविस दौलत पै खाक ।
मुझ को लालच हो तो किस दौलत पै हो ।
उड़ रही है आज जिस दौलत पै खाक ।
राम के चरणों की जो लेते हैं खाक ,
डाल देते हैं वो इस दौलत पै खाक ।।

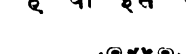

(१५८)

न मैंने तेरा रुख देखा न, तेरे नाज़ को देखा।
न मस्तानी अदा देखी, न कुछ अन्दाज़ को देखा।
लबे नाज़ुक न देखे, और न खुश आवाज़ को देखा।
अगर देखा तो तेरी शक्ल में इस राज़ को देखा।
कि जिसने हुस्न को तेरी बनाई मस्त मूरत है।
यक़ीनन वह मुसव्विर तुझसे बढ़कर खूब सूरत है॥

(१५९)

धर्म वह है कि जो सुन्दर को असुन्दर कर दे।
प्रेम वह है जो असुन्दर को भी सुन्दर कर दे॥

(१६०)

मैं नहीं कहती कि मेरे पास मनमोहन रहें।
मुझसे जितनी दूर टलना हो उन्हें, टलते रहें।
मेरी ख्वाहिश सिर्फ इतनी है-जहाँ भी वह रहें।
बस हमेशा खुश रहें, और फूलते फलते रहें॥

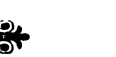

(१६१)

है ख्याल उनका कि सब दुनियाँ में हैं ऐसे ही लोग,
देख कर दौलत के रंगों ढंग खिच आते हैं जो।
है ख्याल अपना कि कुछ दुनिया में हैं ऐसे भी लोग--
देखकर दौलत के रंगो ढंग खिच जाते हैं जो।

(१६२)

तू जहाँ है मैं जा नहीं सकता,
पास तुझ को बुला नहीं सकता।
खैरियत तेरी पा नहीं सकता,
हाल अपना सुना नहीं सकता।
आह दिल आह क्या किया तूने?
दर्दे सर मुफ्त क्यों लिया तूने।
कोई तदबीर लड़ाना मुश्किल,
फतेह तक़दीर का पाना मुश्किल।
जोशे तकरीर दिखाना मुश्किल,
आह के तीर चलाना मुश्किल।
चाल कोई भी चल न पाती है,
तू नहीं आता, याद आती है।

नाम पर तेरे दिया हमने ये सर,
ली कभी तूने हमारी न खबर ।
क्या पता कैसी तू रखता है नज़र,
तुझ पै किस तौर हमारा है असर ।
तेरा आदत नहीं पहचानते हैं,
जान फिर क्यों दी, नहीं जानते हैं ।
जिसका दीदार हो नहीं सकता,
उनेद में जिसकी सो नहीं सकता ।
जिस पै सर्वस्व खो नहीं सकता,
'विन्दु' आँसू के रो नहीं सकता ।
ऐसा माशूक़ निराकार भी क्या ?
ऐसे पर्दा नशीं से प्यार भी क्या ॥

(१६३)

इस इश्क़ का घर दिल के सिवा अक़्ल नहीं है ।
तस्वीर तसव्वुर में है पर अक्ल नहीं है ।
फूला फला शजर है मगर नख्ल नहीं है ।
इस राज़ में क़ुदरत का भी कुछ दख्ल नहीं है ।
जो इसकी है दुनियाँ में दुनिया से जुदा है ।
जो इसका है बन्दा वो खुदा का भी खुदा है ॥

(१६४)

क्या ग़रज दिल दें बुतों को उस से क्या हासिल हमें ।
क्यो न दिल उसको ही दें; जिसने दिया है दिल हमें ।
जिसने पहले पेट में माँ के सम्हाला है हमें ।
बाद पैदाइश के देकर दूध पाला है हमें ।
अक्ल देकर कर दिया हर इल्म में आला हमें ।
हर क़दम पर जिसने हर तूफ़ाँ से टाला है हमें ।
जिसने दिखलाई खग़ाज़े इश्क़ की मज़िल हमें ।
क्यों न दिल उसको हो दें; जिसने दिया है दिल हमें ।।

ध्यान रक्खें—

१—यदि श्री गोस्वामी पण्डित विन्दु जी महराज से पत्र व्यवहार करना चाहें तो पते में [प्रेमधाम, श्रीवृन्दाबन मथुरा] लिखकर भेजें.

२—यदि पुस्तकों के विषय में या नियम आदि के विषय में कुछ पूछना हो अथवा वी० पी० आदि मँगाना हो तो पते में:—

मैनेजर--प्रेमधाम, ब्रह्मकुण्ड,
वृन्दाबन (मथुरा) लिखकर भेजें

३—उपरोक्त नियम से विपरीत पत्र भेजने पर यदि आपके पत्र का उत्तर न भेजा जा सके, या उत्तर देर में भेजा जाय तो आप शिकायत करने के हक़दार न होंगे।

४—यह भी ध्यान रहे कि श्री पं० गोस्वामी जी महाराज के नाम के जो पत्र (बन्द लिफ़ाफे में) होते हैं वह कार्यालय में नहीं खोले जाते। इसलिये पुस्तक आदि सम्बन्धी पत्र यदि खुले रूप में आवें वगैरह भेजें तो उत्तम है।

प्रार्थी—

मैनेजर—कथा कार्यालय,

प्रेमधाम, ब्रह्मकुण्ड वृन्दाबन (मथुरा)